UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 7.0 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 15, No. 2 Year - 15 February, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

अनुक्रमणिका

❧	प्रेमचंद और दलित–विमर्श **डॉ० एस0बी0एन0 तिवारी**	1-4
❧	Micro Finance as a Financing Tools for Micro Enterprises **Tapas Ranjan Roy**	5-10
❧	भाषा का जैविक व सामाजिक आधार **डॉ0 तस्मीना हुसैन**	11-14
❧	मूल्यों का नवप्रवर्तन : भारत में नैतिक प्रगति में समाचार मीडिया प्रकटीकरण और संचार की भूमिका की खोज **नेहा अनमोल जावळे**	15-17
❧	धनबाद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की रूचि का अध्ययन (सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में) **विजय कुमार राम**	18-20
❧	सृजन के फूल **डॉ0 प्रमोद कुमार पाण्डेय**	21-25
❧	भारत में दिव्यांग व्यक्तियों के संवैधानिक एवं सरकारी योजनाएँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्यामकली**	26-32
❧	उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन **डॉ0 शिवम सक्सेना, मोहम्मद आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	33-36
❧	कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना के स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन **महेश चंद जाटव, नितेन्द्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	37-38
❧	सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के स्तर का अध्ययन **विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 शशि मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	39-41
❧	विद्यालयों में शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों का दण्ड के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन **जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	42-44
❧	राजस्थान के फड़ चित्रों की लोकप्रियता **स्मिता जायसवाल एवं डॉ0 जया जैन**	45-48
❧	मानवेंद्र नाथ राय की नव मानववाद एवं वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता **विकाश कुमार निराला**	49-52
❧	बुद्ध युग में शिक्षक शिक्षा एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता **डॉ0 राजन कुमार त्रिपाठी**	53-55
❧	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों में मानसिक परिवर्तन एवं सीखने में परिवर्तन का अध्ययन **श्रीमती मुकेशी बाई मीना, श्रीमती पिंकेश मुद्गल एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	56-58

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 15, No. 2, February 2024
Impact Factor : 7.0
ISSN : 0976-6650

कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना के स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन

महेश चंद जाटव
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
नितेन्द्र कुमार शर्मा
पुस्तकालयाध्यक्ष, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
डॉ0 मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)

सारांश

मानव कल्याण मुख्यतः बच्चों के विषय में संयुक्त राष्ट्र संघ की चिंता को अभिव्यक्त करती है संसार में बहुतायत संख्या में बच्चे भुखमरी, कुपोषण, अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधा तथा उचित शिक्षा की कमी से त्रस्त है। ये स्थिति मुख्यतः विकासशील तथा अविकसित देशों में अस्तित्व में है। ये उद्घोषणाएं वंचित अलाभान्वित बच्चों के संदर्भ में इच्छापूर्ण अभिव्यक्त प्रतीत होती है बच्चों के रहने की स्थिति अत्यधिक कारूणिका और दयनीय है। पारिवारिक और माता–पिता के देखरेख से वंचित इस प्रकार के बच्चे भौतिक और सामाजिक संसार से परस्पर संबंध और समीपता के अवसरो को लगातार खोते जा रहे हैं।

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को लिया गया है जनसंख्या से आदर्श न्यायदर्श स्तरित प्रतिचयन द्वारा न्यादर्श के रूप में 95 विद्यार्थियों को लिया गया न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए शहरी ग्रामीण छात्र–छात्राएं सरकारी व निजी विद्यालय को रखा गया है शोध उपकरण के रूप में सिन्हा तथा सिंह (1989) द्वारा निर्मित स्केल फॉर एसेसिंग सोशल डिसएडवांटेज का प्रयोग किया गया जिसके अंतर्गत कुल 60 मद है। जिसमें सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के मद है आंकड़ों को सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान मानक विचलन और क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया। सामाजिक वंचना की दृष्टि से कला वर्ग के छात्र तथा छात्राएं समान पाये गये। सामाजिक वंचना की दृष्टि से विज्ञान वर्ग के छात्र तथा छात्राएं समान पाये गये।

शोध समस्या की पृष्ठभूमि

मानव कल्याण मुख्यतः बच्चों के विषय में संयुक्त राष्ट्र संघ की चिंता को अभिव्यक्त करती है संसार में बहुतायत संख्या में बच्चे भुखमरी कुपोषण अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधा तथा उचित शिक्षा की कमी से त्रस्त है यह स्थिति मुख्यतः विकासशील तथा अविकसित देश में अस्तित्व में है ये उद्घोषणाएं वंचित अलाभान्वित बच्चों के संदर्भ में इच्छापूर्ण अभिव्यक्त प्रतीत होती है। बच्चों के रहने की स्थिति अत्यधिक कारूणिका और दयनीय है पारिवारिक और माता–पिता के देखरेख से वंचित इस प्रकार के बच्चे भौतिक और सामाजिक संसार से परस्पर संबंध और समीपता के अवसरों को लगातार खोते जा रहे हैं। सामाजिक तौर से पिछड़े बच्चों ने हाल ही में मनोवैज्ञानिकों का ध्यान काफी आकर्षित किया है सामाजिक पिछड़ेपन की धारणा एक बड़ी धारणा है सामान्य भाषा में सामाजिक पिछड़ेपन आर्थिक निर्धनता है। पिछड़े बच्चे गरीबों की देन है या दूसरे अर्थों में सतत् गरीबी चक्र और असफलता की देन है सामाजिक तौर पर पिछडे बच्चे वे होते हैं जो आगे बढ़ने में नाकाम होते हैं तथा उपयुक्त एवं योग्य जीवन नहीं गुजार पाते हैं। मानव जीवन के बीच भेदभाव और ऊंची दीवार खड़ी की जा सकती है इसका ज्वलंत उदाहरण भारतीय समाज में अस्पृश्यता के रूप में स्पष्ट देखने को मिलता है इन लोगों का सैकड़ो वर्षों तक शोषण होता रहा और इन्हें सामाजिक न्याय से वंचित रखा गया कैसी विडंबना है कि एक ओर हिंदू धर्म प्राणी–मात्र के प्रति दया, स्नेह, त्याग और सहानुभूति के भावों को महत्व देता है और दूसरी ओर मानव, मानव के बीच भेदभाव को पनपाता है वास्तव में अस्पृश्यता हिंदुओं के धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास का एक बहुत बड़ा कलंक है।

आज भी भारत में कई इलाकों में दलित स्वर्णो के साथ कुर्सी या चारपाई पर नहीं बैठ सकता गुजरात में हुए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि कुछ रास्ते और सड़कों पर दलितों को चलने की मनाही है। दलितों के लिए पीने खाने के बर्तन अलग रखने की परंपरा भारत के अधिकांश गांव में आज भी कायम है यही नहीं कई गांवों में तो दलितो के लिए अव भी पीने के पानी की अलग व्यवस्था है इसी बात को ध्यान में रखकर स्थिति में सुधार लाने हेतु समय–समय पर अनेक आंदोलन भी हुए परंतु उन्हें धर्म के नाम पर दबाने

की कोशिश की गई पिछले कुछ वर्षों से उनकी स्थिति को सुधारने और उनके कल्याण के लिए अनेक प्रयास चल रहे हैं किंतु अभी बहुत कुछ करना शेष है।

शोध अध्ययन की समस्या

"कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना के स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन।"

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- कला वर्ग के छात्रों तथा छात्राए की सामाजिक वंचना की तुलना करना।
- विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा छात्राए की सामाजिक वंचना की तुलना करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

शोध अध्ययन की शून्य परिकल्पना निर्धारित

- कला वर्ग के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक वंचना में सार्थक अंतर नहीं है।
- विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक वंचना में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध समस्या के अध्ययन का प्रारूप

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन में विवरणात्मक (सर्वेक्षण) अनुसंधान विधि प्रयोग में लाई गई है शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को लिया गया है। जनसंख्या में से आदर्श न्यादर्श स्तरित प्रतिचयन द्वारा न्यादर्श के रूप में 95 विद्यार्थियों को लिया गया है न्यादर्श से पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए शहरी ग्रामीण छात्र छात्राएं सरकारी व निजी विद्यालय को रखा गया शोध उपकरण के रूप में सिन्हा तथा सिंह (1989) द्वारा निर्मित स्केल फॉर असेसिंग सोशल डिसएडवांटेज का प्रयोग किया गया जिसके अंतर्गत कुल 60 मद है जिसमें सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के मद है आंकड़ों का सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमान मानक विचलन और क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का वर्गीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी 1 : कला वर्ग के छात्रों तथा छात्रा के सामाजिक वंचना से संबंधित आंकड़े प्रदर्शित करने वाली सारणी

विद्यार्थी वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	24	21.50	5.02	.011	सार्थक नहीं
छात्राऐं	21	21.52	6.97		

df=44

0.01 सार्थकता स्तर पर सी.आर. मान=1.60

0.05 सार्थकता स्तर पर सी.आर. मान=2.58

तालिका का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है की कला वर्ग के छात्रों तथा छात्राओं में सामाजिक वंचना की दृष्टि से अंतर नहीं है। अतः स्पष्ट है कि सामाजिक वंचना की दृष्टि से कला वर्ग के छात्र तथा छात्राएं समान थे।

सारणी–2 : विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा छात्राओं के सामाजिक वंचना से संबंधित आंकड़े प्रदर्शित करने वाली सारणी

विद्यार्थी वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	26	24.53	11.65	1.09	सार्थक नहीं
छात्राऐं	24	21.45	5.53		

df=49

0.01 सार्थकता स्तर पर टी–मान=1.98

0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मान=2.62

तालिका का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा छात्राओं में सामाजिक वंचना की दृष्टि से अंतर नहीं है क्योंकि क्रांतिक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है अतः स्पष्ट है कि सामाजिक वंचना की दृष्टि से विज्ञान वर्ग के छात्र तथा छात्राएं समान थे।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

- सामाजिक वंचना की दृष्टि से कला वर्ग के छात्र तथा छात्राएं समान पाये गये।
- सामाजिक वंचना की दृष्टि से विज्ञान वर्ग के छात्र तथा छात्राएं समान पाये गये।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. कपिल एच. के., अनुसंधान विधियां, हर प्रसाद भार्गव, आगरा (1989)
2. राष्ट्रीय सहारा राष्ट्रीय समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित शनिवारीय परिशिष्ट लखनऊ
3. हेनरी ए–गेरेट शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी कल्याणी पब्लिशर्स (1991)